हिंदी शिक्षण – वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक चुनौती

अपर्णा व्यास*

वर्षों पूर्व भारत में हिंदी माध्यम से ही शिक्षा प्राप्त की जाती थी व अंग्रेज़ी को एक विषय के रूप में ही पढ़ाया जाता था। किंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्थितियाँ बिल्कुल भिन्न हैं। अंग्रेज़ी ने सर्वोत्तम स्थान प्राप्त कर वातावरण को अपने अधीन कर लिया है व हिंदी मात्र एक विषय बनकर रह गई है। हिंदी की घटती प्रासंगिकता के लिए त्रुटिपूर्ण शिक्षण पद्धति व प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी भी कुछ हद तक ज़िम्मेदार है। वर्तमान में अधिकतर शोध अंग्रेज़ी भाषा में हुए हैं किंतु हिंदी भाषा की त्रुटियों व उनके सुधार हेतु बहुत कम शोध किये गये हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदी भाषा में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ, उन्हें दूर करने के उपाय व विषय को रुचिकर बनाने हेतु बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया है।

हिंदी भाषा वैदिक संस्कृत भाषा का विकसित रूप है। इसकी लिपि देवनागरी है अर्थात् यह जैसी बोली जाती है वैसी ही लिखी जाती है। भाषा मनुष्य की अर्जित संपत्ति है क्योंकि इसे वह पैदा होने के बाद समाज में रहकर सामाजिक जीवन जीते हुए सीखता है। भाषा के विविध रूप विद्यमान हैं। जिसका मुख्य कारण यह है कि मनुष्य अपनी सुविधानुसार भाषा के नियमों में फेरबदल करके बोलने के रूप को सरल कर लेता है। भाषा की शिक्षा वैसे तो विषय के रूप में दी जाती है किंतु बचपन से ही बालक को अनौपचारिक रूप से भाषा का शिक्षण प्राप्त होता है। प्राचीनकाल में 'सिंध' शब्द का प्रयोग सिंधु नदी के लिए होता था। लगभग आठवीं शताब्दी में व्यापारिक संबंधों के बढ़ने के कारण ईरानी यात्रियों का भारत में आवागमन बहुत बढ़ गया था और वे 'स' को 'ह' बोला करते थे। हिंद प्रदेश में बोली जाने वाली भाषा भी धीरे-धीरे हिंदी कहलाने लगी। वहीं हिंदी भाषा आज भारत की राष्ट्रभाषा व कई प्रदेशों की राजभाषा बनी हुई है। हिंदी राष्ट्रीय जागरण और भावनात्मक एकता का आधार है व कई प्रदेशों, जैसे- हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, मध्यप्रदेश, बिहार, चण्डीगढ़ आदि इसी के माध्यम से अपने सामाजिक व राजनीतिक क्रियाकलाप करते हैं। हिंदी के विकास को मुख्यतः चार भागों में बाँटा गया है- वीर गाथा काल, भक्ति काल, रीति काल व आधुनिक काल। वर्तमान काल आधुनिक काल है जिसमें राजनीतिक जागरण और पश्चिमी देशों के प्रभाव से भाषा के प्रयोग से संबंधित लेखक वर्ग कई

* *सहायक प्राध्यापक,* श्री गुजराती समाज शिक्षा महाविद्यालय, इन्दौर (म.प्र.)

समूहों में बँट गए हैं। इस काल में हिंदी भाषा के उच्चारण, शब्द भंडार, नियम, व्याकरण आदि पर अंग्रेज़ी भाषा का बहुत प्रभाव पड़ा है। वर्तमान युग में हिंदी भाषा के शिक्षकों व छात्रों में हिंदी भाषा शिक्षण की नींव सुदृढ़ तभी हो सकती है जब शिक्षण पद्धति, पाठ्यक्रम व भाषायी कौशल विकसित करने के समूचे प्रयास किए जाएँ।

आदर्श किताब के लक्षण

वैसे तो अच्छी किताब को किसी सीमा में बाँधना मुश्किल काम है। किंतु फिर भी पुस्तक में विषय-वस्तु से संबंधित परिवेश, कहानी कविताओं से संबंधित चित्र, अक्षरों का सही आकार, कहानी का सुखद व उद्देश्यपूर्ण अंत होना अनिवार्य है। विषय-वस्तु ऐसी हो जिससे छात्रों को अपने विचार स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का पर्याप्त अवसर मिल सके साथ ही उनमें लगन, जिज्ञासा, दयालुता, प्रेम व सहयोग इत्यादि मानवीय गुणों का विकास हो सके। कहानियाँ ऐसी हों जो छात्रों में उनकी उम्र के अनुसार विचारशीलता व तर्कशीलता विकसित करने में सक्षम हों। उदाहरण के लिए, यदि प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' को लें तो उसमें बालमन पर स्वयं का नियंत्रण व अपनी सही बात पर अडिग रहने का संदेश हामिद के द्वारा प्रेषित किया गया है। हामिद के खिलौने न लेकर चिमटा खरीदने के तर्क हतप्रभ करने वाले थे। इस कहानी के माध्यम से छात्रों में बोधगम्यता व युक्तिसंगत बात कहने की प्रेरणा दी गई है। यह संदेश बच्चों के वार्तालाप से ही दिया गया है। आमतौर पर यह देखा गया है कि पुस्तक में छात्रों की उम्र के अनुसार विषयवस्तु नहीं रहती है, पात्रों का क्रियाकलाप व संवाद बड़ों की तरह परिपक्व होता है। उसमें मासूमियत का अभाव पाया जाता है। किताब में चित्र ऐसे होने चाहिए जिसमें कुछ घटित होना दर्शाया जाता है। छात्रों की सोच को गतिशील व दिशानिर्देशित होने का अवसर मिले। पुस्तक की भाषा सहज व सरल होनी चाहिए। प्रस्तुतीकरण में अतिरंजितता व बनावटीपन नहीं झलकना चाहिए। यदि भाषा प्रवाह सरल होता है तो कठिन शब्दों का अर्थ भी विषयवस्तु के संदर्भ द्वारा अनुमान लगाकर निकाला जा सकता है। पुस्तक की विषयवस्तु में वर्तमान व स्थानीय संदर्भ पर भी ध्यान देना आवश्यक है। पुस्तक में गद्य, पद्य, व्याकरण, एकांकी, नाटक आदि के शिक्षण हेतु विभिन्न शिक्षण पद्धतियों का उल्लेख होना चाहिए, जिससे संबंधित शिक्षक को शिक्षण में कोई कठिनाई का सामना न करना पड़े।

हिंदी शिक्षण में होने वाली सामान्य त्रुटियाँ व अशुद्धियाँ

भाषा शिक्षण की सफलता अभिव्यक्ति कौशल पर निर्भर है। अभिव्यक्ति की क्षमता वाचन तथा लेखन की शुद्धता पर आधारित होती है। वाचन में शुद्ध उच्चारण व लेखन में शुद्ध वर्तनी का विशेष महत्त्व है। शुद्ध उच्चारण का अर्थ मानक उच्चारण से होता है। सर्वमान्य उच्चारण को मानक उच्चारण या शुद्ध उच्चारण मानते हैं। यदि उच्चारण स्पष्ट व शुद्ध न हो तो भाव-भंगिमा हो जाती है।

उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ

उच्चारण संबंधी अशुद्धियाँ निम्न प्रकार की हो सकती हैं, जैसे-

- वर्णमाला के उच्चारण में चे, छ, ज, झ को चै, छै, जै, झै उच्चारित करते हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश में इसी प्रकार से उच्चारण करते हैं।

- शब्द के अंत में लिखते 'इ' और बोलते 'ई' हैं। इसी प्रकार अंत में लिखते 'उ' और बोलते 'ऊ' हैं। नीति को नीती तथा मनु को मनू उच्चारित करते हैं।
- स्वरागम का दोष हो सकता है, जैसे- इस्मारक, इस्कूल, इस्टेशन आदि बोलते हैं।
- 'ऋ' लिखकर 'र' पढ़ते हैं, वृक्ष को व्रश व गृहशोभा को ग्रहशोभा बोलते हैं।
- 'ण' को 'न' उच्चारित करते हैं, जैसे- गुणी को गुनी, श्रवण को श्रवन बोलते हैं।
- श, ष, स वर्ण से संबंधित उच्चारण दोष अक्सर पाए जाते हैं, जैसे- स्त्रोत को श्रोत, शक्कर को सक्कर, शाम को साम, विस्तार को विश्तार, दोष को दोस उच्चारित करते हैं।
- 'ट' को 'ठ' व 'ठ' को 'ट' उच्चारित करते हैं, जैसे- श्रेष्ठ को श्रेष्ट व स्वादिष्ट को स्वादिष्ठ पढ़ते हैं।
- 'छ', 'क्ष', 'च्छ' से संबंधित अशुद्धियाँ होती हैं, जैसे- भिक्षा को भिच्छा, क्षेत्रीय को छेत्रीय व क्षमा को छमा उच्चारित करते हैं।
- 'ड', 'ढ', 'र' से संबंधित अशुद्धियाँ भी होती हैं, जैसे- पढ़ना को पड़ना, लड़ाई को लढ़ाई, लड़की को लरकी आदि उच्चारित करते हैं।
- 'व' और 'ब' के उच्चारण में भी अक्सर त्रुटि करते हैं, जैसे- वंदना को बंदना व विनती को बिनती उच्चारित करते हैं।
- उच्चारण में लोप आगम भी हो जाता है जो अशुद्धि का एक प्रकार है, जैसे- अध्ययनरत को अध्यनरत, गौरवान्वित को गौरन्वित पढ़ा जाता है जो कि दोषपूर्ण है।

वर्तनी संबंधी अशुद्धियाँ

भाषा के मौखिक प्रयोग में उच्चारण की शुद्धता और उसके प्रयोग की कुशलता का जितना महत्त्व है, उतना ही महत्त्व भाषा के लिखित प्रयोग में वर्तनी की शुद्धता और उसके प्रयोग का है। वर्तनी का शाब्दिक अर्थ है, वर्तन यानि अनुवर्तन अर्थात् पीछे-पीछे चलना।

अशुद्ध वर्तनी के मुख्यतः तीन कारण हैं-

1. हिंदी वर्णमाला और वर्णों के प्रयोग का सही ज्ञान न होना

- वर्णों के साथ मात्राओं का सही ज्ञान न होने की वजह से छात्र भूल कर देते हैं और वर्तनी की अशुद्धियाँ हो जाती हैं। प्रत्येक वर्ण पर सही ढंग से मात्रा, अनुस्वार, विसर्ग, चंद्रबिन्दु लगाकर चार्ट तैयार करके उसे कक्षा में दिखाया जा सकता है, जैसे- अनुस्वार-खं, विसर्ग-खः व अनुनासिक-खँ।
- हिंदी वर्णमाला में चार संयुक्त व्यंजन अलग से दे दिए गए हैं क्योंकि उनमें दो वर्णों का संयोग होने पर उनका रूप बदल जाता है और उनकी अपनी पहचान नहीं रहती है, जैसे-क्+ष=क्ष, त्+र=त्र, ज्+ञ=ज्ञ, श्+र=श्र। किंतु अन्य संयुक्त व्यंजनों में व्यंजनों की पहचान बनी रहती है।
- कुछ वर्णों में संयोग होने पर उनकी पूँछ हटाकर दूसरे वर्ण का संयोग किया जाता है, जैसे- पक्का, अभियुक्त, उपयुक्त आदि।
- ट, ठ, ड, ढ, द, ह वर्णों के नीचे हल चिह्न लगाकर इनके संयुक्त रूप लिखे जाते हैं, जैसे – विद्यालय, कंठ्य, लठ्ठा।

- विभक्ति चिह्न को हमेशा संज्ञा शब्दों से अलग करके लिखा जाता है जैसे- राधा ने, राम को, राहुल का आदि। किंतु सर्वनाम शब्दों में इन्हें मिलाकर लिखा जाता है, जैसे- उसने, मुझको, उनमें आदि। यदि दो विभक्ति चिह्न सर्वनाम के साथ आ रहे हों तो उनमें से पहले को मिलाकर व दूसरे को अलग करके लिखा जाता है, जैसे- उनमें से, उसके लिए आदि।
- शब्दों में यदि अव्यय प्रति, मात्र, यथा आदि आ रहे हों तो उन्हें पृथक नहीं लिखते हैं, जैसे- प्रतिनिधि, जीवमात्र, मनुष्यमात्र आदि।

2. उच्चारण की अशुद्धता

यदि छात्रों के उच्चारण में अशुद्धता होती है तो वर्तनी के भी अशुद्ध होने की संभावना हो जाती है। अतः शुद्ध वर्तनी के लिए शुद्ध व स्पष्ट उच्चारण होना अनिवार्य है। उच्चारण संबंधी अशुद्धियों की चर्चा पहले की जा चुकी है।

3. व्याकरण संबंधी नियमों की अज्ञानता

व्याकरण संबंधी नियम जैसे संधि का नियम, उपसर्ग और प्रत्यय से शब्द रचना का नियम, लिंग, वचन संबंधी नियम, हाइफन के प्रयोग संबंधी नियम आदि का सही ज्ञान न होने से भी वर्तनी की अशुद्धियाँ होती हैं।

शिक्षक की भूमिका

हिंदी के शिक्षक को भाषा संरचना का संपूर्ण ज्ञान होना अत्यंत आवश्यक है। शिक्षक को छात्रों में श्रवण, वाचन, पठन तथा लेखन कौशलों का विकास इसी क्रम में करवाना चाहिए। चारों कौशलों के उचित विकास से ही भाषा अधिगमपूर्ण होता है। छात्रों को ध्वनि विज्ञान का यथोचित शिक्षण देकर अशुद्धियों का निदान करके उपचार किया जा सकता है। शिक्षक को वाक्य संरचना का सही बोध होना चाहिए। वाक्य में शब्दों का सुनिश्चित व सुगठित क्रम होता है। इसके साथ ही व्याकरण के नियमों का पालन करना भी आवश्यक है। वाक्य संरचना करते समय उसका उचित भावार्थ भी देना होता है। शिक्षक को शिक्षण में प्रयोगात्मक व्यावहारिक व्याकरण को महत्त्व देना चाहिए। भाषा शिक्षण में सरल से जटिल की ओर, अमूर्त से मूर्त की ओर व ज्ञात से अज्ञात की ओर अग्रसर होना चाहिए। उद्देश्यों का चयन भी स्तरानुसार किया जाना चाहिए। उच्च स्तर के शिक्षण में समालोचना और सौंदर्यानुभूति उद्देश्य पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों का ज्ञान होना भी नितांत आवश्यक है। पद्य शिक्षण के लिए संगीत विधि व प्रवचन विधि का ज्ञान, गद्य शिक्षण के लिए अनुवाद विधि, प्रवचन विधि, प्रश्नोत्तर विधि आदि का ज्ञान, इसी प्रकार से कहानी आदि के लिए भी विभिन्न विधियों का ज्ञान वांछनीय है। भाषा शिक्षक को कक्षा में अनौपचारिक वातावरण निर्मित करना चाहिए ताकि छात्र विचारों की अभिव्यक्ति में किसी भी प्रकार का संकोच न करें। भाषा शिक्षक को भाषा का प्रयोग व भाषा की विषयक जानकारी होना भी आवश्यक है। भाषा शिक्षण के प्रायोजित उद्देश्यों को पूरा करने के लिए प्रारंभ से ही छात्रों को उनके परिवेश से संबंधित प्रक्रियाओं व विशेषताओं की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति के उचित अवसर उपलब्ध करवाना चाहिए। छात्रों में सृजनात्मक लेखन को बढ़ावा

देना चाहिए। प्राथमिक कक्षाओं में खेल विधि से पढ़ाना उचित होता है जिससे शब्द भंडार में वृद्धि के साथ ही छात्रों का मनोरंजन भी होता है। इस प्रकार भाषा के शिक्षक की ज़िम्मेदारी अन्य विषयों के शिक्षक की तुलना में कुछ अधिक है क्योंकि शुद्ध भाषा का ज्ञान व प्रयोग छात्र की जीवनभर की उपलब्धि होती है और मनुष्यमात्र जब तक जीवित है वह भाषा का प्रयोग जीवन के अंतिम क्षण तक करता है। अत: भाषा शिक्षक की भूमिका छात्र के सर्वांगीण विकास में सबसे अधिक होती है।

हिंदी शिक्षण को प्रभावी बनाने हेतु उपाय

- भाषा शिक्षण में मानकता का होना वांछनीय है किंतु इस प्रयास में समुचित लचीलापन, स्वाभाविकता, सहजता व सरलता होनी चाहिए। भाषा शिक्षण को प्रारंभिक स्तर पर कड़े नियमों में बाँधना उचित नहीं है, क्योंकि अभिव्यक्ति कौशल विकसित करना एक सृजनात्मक कार्य है।
- निदानात्मक परीक्षण द्वारा छात्र की विशुद्ध कमज़ोरी को पहचानकर उसको दूर करने का यथासंभव प्रयास होना चाहिए। कक्षा में व्यक्तिगत भिन्नता के कारण कठिनाई स्तर व कमज़ोरियाँ भी भिन्न प्रकार की होती हैं। अत: जिस प्रकार अलग-अलग तरह के रोगों की भिन्न-भिन्न औषधि होती है उसी प्रकार हर छात्र की कमज़ोरी का एक जैसा उपचार संभव नहीं है। निदानात्मक परीक्षण के आधार पर ही उपचारात्मक कार्य किया जा सकता है।
- शिक्षक समयानुसार अपनी न्यूनताओं का पता लगाए व स्वयं के स्वर वाचन को टेप करके अपने उच्चारण की स्पष्टता, स्वर प्रवाह, उचित बलाघात, गति, यति आदि का विश्लेषणात्मक अध्ययन करे व तत्पश्चात् छात्रों की कमियों को दूर करने का प्रयत्न करे।
- उपचारात्मक शिक्षण करते समय छात्र को यह महसूस नहीं होने देना चाहिए कि उसकी कमज़ोरियों का उपचार किया जा रहा है, क्योंकि कोई भी छात्र अपने आप को कमज़ोर कहलाना पसंद नहीं करता है। यह शिक्षण छात्र के वास्तविक स्तर से प्रारंभ किया जाना चाहिए चाहे उसकी कक्षा कोई भी हो।
- छात्रों को दिया जाने वाला कार्य विविधतापूर्ण हो ताकि उन्हें बोरियत या थकावट महसूस न हो। गृहकार्य में सृजनात्मक लेखन अधिक से अधिक हो न कि सिर्फ़ प्रश्न-उत्तर को याद करके सुनाना व लिखना। स्वरचित रचनाओं के लिए उन्हें प्रोत्साहित भी करना आवश्यक है।
- यदि बालक के उच्चारण में अशुद्धि है तो उसे शिक्षक के मानक उच्चारण का अनुकरण करवाया जाए, वर्तनी की शुद्धि सिखाने हेतु श्रुतलेख व अनुलेख करवाए जाएँ व व्याकरण की त्रुटियों व वाक्य संरचना की कमियों को दूर करने हेतु व्याकरण के नियमों का उचित ज्ञान व अभ्यास करवाया जाना चहिए।
- विभिन्न यंत्रों का प्रयोग, जैसे-ओवरहेड प्रोजेक्टर, टेपरिकॉर्डर, टीवी आदि के माध्यम से भी कौशलों का सही विकास किया जा

सकता है। यदि शिक्षक का उच्चारण मानक है तो शिक्षक के ही उद्‌बोधन व शिक्षण सामग्री को टेपांकित कर बार-बार सुनने व दोहराने से मौखिक अभिव्यक्ति व उच्चारण को सुधारा जा सकता है। भाषा प्रयोगशाला का प्रयोग भी इस दिशा में एक सार्थक कदम है।

निष्कर्ष

हिंदी भाषा शिक्षण के लिए भाषा का व्याकरणिक ज्ञान, भाषा कौशलों का विकास तथा पाठ्यपुस्तक का सामान्य अध्यापन पर्याप्त नहीं है। इस हेतु समुन्नयन कार्य आवश्यक है। शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों के विशेष प्रयास को ही समुन्नयन कार्य कहते हैं। हिंदी के शब्द भंडार की वृद्धि छात्रों के भाषा ज्ञान के लिए आवश्यक है। शब्द निर्माण के लिए संधि, समास, उपसर्ग एवं प्रत्यय का ज्ञान तथा इनके अधिक से अधिक उदाहरण शब्द भंडार वृद्धि में सहायक होते हैं। शिक्षक की भूमिका भाषा शिक्षण में प्रेरणादायी होती है। शिक्षक विविध साहित्य प्रतियोगिताओं, एकांकी, नाटकों के अभिनय, वाद-विवाद प्रतियोगिताओं, कवि दरबार आदि का आयोजन करके विद्यार्थियों में भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न कर सकता है। समुन्नयन कार्य के अंतर्गत कविता पाठ भी समझ एवं आनन्दानुभूति के लिए समभावी कविताओं का संकलन भी किया जा सकता है। भाषा के शिक्षण में विकासात्मक तथा उपचारात्मक दोनों ही प्रकार के शिक्षण को सम्मिलित करना आवश्यक है। पूर्व ज्ञान को समृद्ध करना और नये ज्ञान व अनुभव से अवगत कराना विकासात्मक शिक्षण है। अस्वस्थता, मंद बुद्धि, अवैज्ञानिक शिक्षण, दोषपूर्ण परिवेश के कारण छात्रों के अधिगम में दोष अथवा त्रुटियाँ होती हैं। इस प्रकार की त्रुटियाँ मातृभाषा या अन्य परिवेश की भाषाओं के प्रभाव के कारण अधिक पाई जाती हैं। इन त्रुटियों को दूर करने के लिए निदानात्मक परीक्षण तथा उपचारात्मक शिक्षण की व्यवस्था विद्यालयों में की जानी चाहिए। भाषा शिक्षकों को इसकी पूरी प्रक्रिया का प्रशिक्षण मिलना चाहिए तभी विद्यार्थियों में भाषा का सही अधिगम संभव हो सकेगा।

संदर्भ

चतुर्वेदी, शिखा. 2012. *हिंदी शिक्षण.* आर.लाल बुक डिपो, मेरठ

शर्मा, राधाकृष्ण एट ऑल. 2005. *हिंदी भाषा और साहित्य शिक्षण.* चिल्ड्रन बुक हाउस, जयपुर

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. 2008. *हिंदी शिक्षण प्रविधि.* ई.एस.-345, शिक्षा विद्यापीठ

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. 2008. *हिंदी शिक्षण प्रविधि.* ई.एस.-345ए, शिक्षा विद्यापीठ

एन.सी.ई.आर.टी. 2005. *नेशनल करीकुलम फ्रेमवर्क.* नयी दिल्ली

कुमार, के. 1986. *बच्चे की भाषा और अध्यापक-एक निर्देशिका.* संयुक्त बाल कोष, नयी दिल्ली

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय. 2008. हिंदी शिक्षण प्रविधि. ई.एस.-345, *मूल्यांकन क्रियात्मक शोध तथा समुन्नयन कार्य.* शिक्षा विद्यापीठ, नयी दिल्ली

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय. 2008. हिंदी शिक्षण प्रविधि, ई.एस.-345, *मापित योग्यताओं का विकास.* शिक्षा विद्यापीठ, नयी दिल्ली